दैनिक भास्कर
बीकानेर, रविवार, 19 अप्रैल, 2015 4

'भेड़ों में कृत्रिम गर्भाधान एक नया आयाम'

बीकानेर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (पशु विज्ञान), नई दिल्ली के प्रोफेसर के.एम. एल पाठक ने केन्द्रीय भेड़ व ऊन अनुसंधान संस्थान के मरु क्षेत्रीय परिसर का दौरा किया। परिसर में नवनिर्मित कृत्रिम गर्भाधान प्रयोगशाला का उद्घाटन किया।

प्रो. पाठक ने भेड़ पालकों को संबोधित करते हुए भेड़ों में कृत्रिम गर्भाधान की आधुनिक तकनीक को अपनाने व अधिक से अधिक फायदा लेने का आह्वान किया।

संस्थान के निदेशक डॉ. एस.एम. नकवी ने बताया कि कृत्रिम गर्भाधान के लिए उपलब्ध इस सुविधा का लाभ शुरू में मगरा परियोजना के तहत पंजीकृत भेड़ पालकों को उपलब्ध करवाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। केन्द्र के प्रभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. पटेल ने कृत्रिम गर्भाधान प्रयोगशाला विकसित करने के प्रयासों का उल्लेख किया।

फोल्डर का विमोचन करते के.एम.एल. पाठक व अन्य अधिकारी।

वर्तमान परिवेश में पशुपालन समस्याएं व समाधान पर पुस्तिका व चोकला भेड़ व आहार वटिका की जानकारी के लिए फोल्डर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. बी.एन. त्रिपाठी, राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल, राष्ट्रीय बागवानी संस्थान के निदेशक डॉ. एस.के. शर्मा व काजरी के प्रभागाध्यक्ष डॉ. एन.डी. यादव भी उपस्थित थे।

राजस्थान पत्रिका
बीकानेर, रविवार, 19 अप्रेल 2015 02

भेड़ों में कृत्रिम गर्भाधान एक नया आयाम

बीकानेर @ पत्रिका . भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक एवं पशु विज्ञान नई दिल्ली के प्रोफेसर केएमएल पाठक ने केन्द्रीय भेड़ व ऊन अनुसंधान संस्थान के मरू क्षेत्रीय परिसर में नव निर्मित कृत्रिम गर्भाधान प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने भेड़ पालकों से भेड़ों में कृत्रिम गर्भाधान की आधुनिक तकनीक को अपनाने व अधिक फायदा लेने का आह्वान किया। उन्होंने आश्वस्त किया कि इस प्रयोगशाला से भेड़ पालकों को भविष्य में फायदा होगा। संस्थान के निदेशक डा. एस.एम.के. नकवी ने बताया कि कृत्रिम गर्भाधान के लिए उपलब्ध इस सुविधा का लाभ आरंभ में मगरा परियोजना में पंजीकृत भेड़ पालकों को दिया जाएगा। केन्द्र के प्रभागाध्यक्ष डा. एके पटेल ने कृत्रिम गर्भाधान प्रयोगशाला की जानकारी दी।इधर, भेड़ों में कृत्रिम गर्भाधान विषय पर किसानों के लिए एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. बीएन त्रिपाठी, राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डा. एन.वी.पाटिल, राष्ट्रीय बागवानी संस्थान के निदेशक डॉ. एसके. शर्मा एवं काजरी के प्रभागाध्यक्ष डा. एन.डी.यादव भी उपस्थित थे।